(1)

BA-III
मैथिली प्रतिष्ठा
पंचम-पत्र,
मैथिली साहित्य इतिहास
व्याख्यान - II

प्रो० संजीत कुमार राय
(अतिथि व्याख्याता)
मैथिली विभाग
V.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (Lnmu)

Topic- तन्त्रनाथ झाक महाकाव्य कृष्णचरित :-

बारह सर्गक कृष्णचरित अपनालोकिक प्राचीन 'गुरुकुल' प्रथाक विलक्षण चित्र प्रस्तुत करैत अछि। महर्षि सन्दीपनिक आश्रमोद्यानमे विकल्पाहुटमे युक्त विद्यालयमे कृष्ण, बलराम, सुदामा सन-सन कतोक शिक्षार्थी शिक्षाग्रहण करैत छलाह। महाकाव्यमे भारतीय परम्पराक सर्वोच्च प्रतिबिम्बित भेल अछि। आश्रम संस्कृतिक आचार-व्यवहार, शहर-बजारक शोरगुलसँ दूर शिक्षक-शिक्षार्थीक सम्बन्धक प्रगाढ़ता आ घनिष्ठता, शैशवक निश्छलता प्रकाशित भऽ गेल अछि। जे बच्चा मनुष्यक पिता थिक तें हमरालोकनिकें एतय बालक कृष्णकें गौरव देखबाक चाही जे बादमे ओ कोना अतैव श्रेष्ठ मनुष्य बनलाह। जतय कृष्ण आ बलराम प्रतीक छवि अछि सब वस्तुक जे उच्च वा श्रेष्ठ अछि ओतय सुदामा प्रतिमान थिकाह ओकर जे उच्चोसँ उच्चतर होइछ। सरकारक राजाक रूपमे कृष्णचरित्रक आकर्षण भारतीय साहित्यमे देखल जाइत अछि। मुदा हुनक छात्र-जीवनक सजीव चित्रांकन हम कतहु नहि पबैत छी। बालक जीवनक विकासक विशिष्ट सन्दर्भमे कृष्णक विद्यालय-जीवनक जे सम्पूर्ण विवरण देल गेल अछि से बहुत अर्थपूर्ण अछि। एतय अंगी रस भक्ति थिक। संक्षेपमे हम कहि सकैत छी जे महाकाव्य प्राचीन गौरव-गरिमाक दर्पणमे आजुक मिथिलाक झाँकी देखबैत अछि।

कृष्ण लोकनायकक रूपमे जानल जाइत छथि, मुदा गुरुवर सन्दीपनिक महान शिक्षार्थीक रूपमे, बलरामक प्रिय भ्राताक रूपमे, सुदामाक मित्र आ सर्वाधिक आश्रमे

अपन तिगी का~~स~~वीरक मध्य चुम्बकीय शक्तिक रूपमे कृष्णकें बिनु जननाहि हुनक स्वाभिमान अपूर्ण अछि। कृष्ण ओ शिशुपाल सदृश दैत्यक संहारक रूपमे ओ जानल जाइत अछि। महाकाव्य संदेश ईहन अछि जे एकमात्र मानव जिज्ञासा ऐहिलौकिक सुख सम्पत्ति आ पारलौकिक मोक्ष वा अमरता दुहुकें ताहि संकेत अछि। एहि महाकाव्य पर तन्त्रनाथ झाकें 1979 ई० मे. कृष्ण चरित पर साहित्य अकादेमीक पुरस्कार भेटलनि अछि।

Sanjeet Kumar